International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

क्षेत्रीय पत्रकारिता में महिलाओं का प्रतिनिधित्व (उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में अध्ययन)

सुमित जोशी[1], डॉ. चेतन भट्ट[2], डॉ. राकेश चंद्र रयाल[3]

[1]शोधार्थी, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड लिबरल आर्ट्स, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड लिबरल आर्ट्स, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)
[3]एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

शोध सारांश

भारत की पहली महिला पत्रकार होने का सम्मान मोक्षदायिनी देवी को प्राप्त है। उन्होंने सन 1848 में पत्रकारिता क्षेत्र में कदम रखा। पराधीन भारत में ब्रिटिश शासन सामने समाचार पत्र शुरू करना चुनौतियों से भरा हुआ था, साथ ही देश में अशिक्षा एक बहुत बड़ी समस्या थी। इसके बावजूद महिलाओं ने धीरे-धीरे कदम बढ़ाकर कलम की ताकत दिखाई। विभिन्न भाषाई समाचार पत्र-पत्रिकाएं महिलाओं ने शुरू कीं। पत्रकारिता में प्रिंट मीडिया के अलावा अन्य आयाम भी शामिल हुए। समय के साथ महिलाओं ने मुख्यधारा की पत्रकारिता की ओर कमद बढ़ाए लेकिन आज भी मीडिया पुरुषों की प्रधानता नजर आती है। हालांकि, राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता में परिस्थितियां थोड़ी सुधरी जरूर है लेकिन क्षेत्रीय पत्रकारिता में आज भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व नाम मात्र का है। यह शोध कार्य क्षेत्रीय पत्रकारिता में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के अध्ययन पर आधारित है और उत्तराखंड राज्य को केंद्र में रखकर किया गया। विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्य उत्तराखंड से संबंधित इस अध्ययन में पाया गया कि यहां पत्रकारिता में महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफी न्यून है। राज्य से प्रकाशित लीडिंग समाचार पत्रों में एक भी महिला सम्पादक नहीं है। साथ ही जिला और तहसील ब्यूरो कार्यालयों की कमान पुरुषों के पास है। लीडिंग मीडिया संस्थानों में संवाददाताओं के रूप में महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों की तुलना में काफी कम है। उत्तराखंड में संचालित नेशनल मीडिया हाउसों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व भले ही कम हो लेकिन स्थानीय सांध्य दैनिक, पाक्षिक समाचार पत्रों में महिलाओं की प्रतिभागिता अधिक है और वह नेतृत्वकर्ता के रूप में दर्ज हैं।

संकेत शब्द : पत्रकारिता, मीडिया, महिला पत्रकार, क्षेत्रीय पत्रकारिता ।

प्रस्तावना

'बेटी बचाओ - बेटी बचाओ ', महिला सशक्तिकरण जैसे स्लोगन मातृ शक्ति को प्रगति के लिए प्रोत्साहित करते हैं, सरकारें और तमाम संगठन इन विषयों पर काम भी कर रहे हैं। भारत सरकार ने ' नारी शक्ति वंदन अधिनियम: 2023 ' लाकर संसद में 33 प्रतिशत सीटें महिला सदस्यों के लिए आरक्षित करने का प्राविधान किया है। विविध क्षेत्रों में प्रगति कर रहीं महिलाओं को 29 सितंबर 2023 को बने इस कानून से राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति का भी मार्ग मिलेगा। महिलाओं के प्रोत्साहन के लिए भारतीय मीडिया भी योगदान देता नजर आता है। समाचार पत्र संस्थान अमर उजाला 'अपराजिता' नामक कार्यक्रम

चलता है और हिन्दुस्तान ' वुमन अचीवर्स अवॉर्ड ' समारोह आयोजित करता है, साथ ही अन्य मीडिया संस्थान अलग-अलग क्रियाकलाप करते हैं। पत्रकारिता संस्थान महिलाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी तो निभा रहे हैं लेकिन मीडिया क्षेत्र में महिला संपादक और पत्रकारों का प्रतिनिधित्व कम देखने को मिलता है।

'भारतीय पत्रकारिता में वर्ष 1848 में मोक्षदायिनी देवी ने पहली महिला पत्रकार के रूप कदम रखा था।' (अनुजा, डॉ . मंगला, 2019) ब्रिटिश शासन ने समाचार पत्र-पत्रिकाएं निकालना चुनौती था और देश में अशिक्षा भी एक बड़ी समय थी। इसके बावजूद कुछ महिलाओं ने आगे आकर कलम की ताकत दिखाई। स्वतंत्रता के बाद भारत में '1960 के दशक के बाद महिलाएं खुलकर पत्रकारिता क्षेत्र में कदम रखने लगीं, हालांकि उस दौर में मध्य और उच्च मध्यम वर्ग की महिलाएं ही पत्रकारिता करने लगीं थीं। वर्ष 1980 के दशक परिदृश्य बदला (pinkcity,2021) और नए आयाम पत्रकारिता में शामिल हुए तो महिलाओं की मीडिया क्षेत्र में कार्य करने को लेकर रुचि में वृद्धि होने लगी। बदलते परिदृश्य के बावजूद ' भारत और विश्व के मीडिया आज भी पुरुषों की प्रधानता नजर आती है। ' (Feminism in india, 2023) हालांकि, भारतीय मीडिया उद्योग में राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व दिखता है, इसमें भी न्यूज़ एंकर के रूप में अधिक नजर आती हैं। लेकिन राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर पत्रकारिता का स्वरूप, कार्यशैली और परिस्थितियों में काफी अंतर है। ऐसे में इस शोध पत्र में क्षेत्रीय पत्रकारिता में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को जानने का प्रयास किया गया है। मुख्य रूप से पारंपरिक मीडिया यानि प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में स्थितियों का आंकलन किया गया है। यह अध्ययन पर्वतीय राज्य उत्तराखंड पर केंद्रित है, ऐसे यहां की परिस्थितियों को भी ध्यान में रखा गया है।

साहित्य समीक्षा

समाज की पुरानी व्यवस्थाओं की बाधा को तोड़ महिलाएं चार दीवारी से निकलकर चांद पहुंच चुकी हैं। विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे भी बढ़ रही हैं। महिला सशक्तिकरण के इस युग में नारीशक्ति की प्रधानता नजर आती है। ' भारत में नारीशक्ति वाक्य का प्रयोग बीते कुछ वर्षों में अधिक बढ़ा है, ऐसे में वर्ष 2018 में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने 'नारीशक्ति' शब्द को हिन्दी वर्ड ऑफ द ईयर का दर्जा प्रदान करने के साथ अपने शब्दकोश में स्थान प्रदान किया। ' (सिंह, ध्वनि, 2020) सरकारी व्यवस्था और कारपोरेट जगत में महिला अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपने परिश्रम से अलग मुकाम प्राप्त किया और इन सेवाओं में महिला प्रतिनिधित्व बढ़ भी रहा है। जनसंचार क्षेत्र के प्रमुख और प्रचलित आयाम पत्रकारिता ' भारत ही नहीं पूरे विश्व में काफी हद तक पुरुष प्रधान है। ' (यूएन, 2019) '

भारत से नारीशक्ति शब्द प्रचलित हुआ है' (ऑप इंडिया, 2019), लेकिन आबादी का 50 प्रतिशत होने के बावजूद मीडिया क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 50 प्रतिशत से भी कम है। यहां पत्रकारिता के प्रथम आयाम प्रिंट मीडिया में सिर्फ 13 प्रतिशत महिलाएं हैं। न्यूज चैनलों में 52 प्रतिशत महिला संवाददाता और रेडियो न्यूज कास्टर के रूप में 20 प्रतिशत महिला हिस्सेदारी नजर आती है। ' (Feminism in india, 2023) ' कार्य विभाजन के रूप में बात करें तो महिला संवाददाताओं को अकसर लाइफ स्टाइल और फैशन जैसी सॉफ्ट बीटें प्रदान की जाती हैं, जबकि प्रमुख अर्थ, राजनीति जैसी बीट पुरुष संवाददाताओं के हवाले रहती हैं। ' (यूएन, 2019) ' भारतीय मीडिया में लैंगिक असमानता नाम से प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र महिला की रिपोर्ट बताती है कि भारत के प्रमुख मीडिया संस्थानों में महिला पत्रकारों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है। महिलाओं का अखबार और न्यूज चैनलों की अपेक्षा डिजिटल मीडिया में अधिक प्रतिनिधित्व है। साथ ही न्यूज चैनलों में

20.9 प्रतिशत और पत्रिकाओं में 13.6 प्रतिशत महिलाएं बॉस की स्थिति में हैं। मीडिया स्टडीज ग्रुप की एक रिपोर्ट अनुसार भारत में जिला स्तर पर मीडिया में सिर्फ 2.7 प्रतिशत महिलाएं काम करती हैं। ' (Times of India)

भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में महिला पत्रकार: स्वतंत्रता से पूर्व व स्वतंत्रता के बाद

भारत की भाषाई पत्रकारिता में कोलकता का एक अलग स्थान है, हिन्दी का पहला समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड इसी भूमि से प्रारंभ हुआ। इसी तरह महिलाओं का पत्रकारिता क्षेत्र में पदार्पण भी पश्चिम बंगाल से ही हुआ था। ' डॉ. मंगला अनुजा की पुस्तक **'आधी दुनिया की पूरी पत्रकारिता'** के अनुसार मोक्षदायिनी देवी को भारत का पहला महिला पत्रकार माना जाता है। उन्होंने वर्ष 1848 में 'बांग्ला महिला' नामक पत्रिका प्रकाशित की थी। ' भारत विविधताओं का देश है, ऐसे में अन्य भाषाओं में भी महिलाओं ने पत्र-पत्रिकाओं की शुरुआत की। ' चेनम्मा तुमरि को कन्नड़, आसिफ जहां को उर्दू तुनाबाई को मराठी, रेवा राय को ओडिशी, के.रामलक्ष्मी को तेलुगू, जालु कांगा गुजराती और कल्याणी अम्मा को मलयालम भाषा में महिला पत्रकारिता के प्रारम्भ का सम्मान प्राप्त है। (प्रभात खबर, 2023) ' भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन में लोगों को जागरूकत करने में समाचार पत्र और पत्रिकाओं की अहम भूमिका थी। '

'1914 में एनी बेसेंट ने द न्यू इंडिया और कॉमन व्हील अंग्रेजी साप्ताहिक की शुरुआत की। ' (जीके हिन्दी,2017) ' लाला लाजपत राय ने वर्ष 1916 में साप्ताहिक 'यंग इंडिया' की शुरुआत की थी और वर्ष 1919 से वर्ष 1931 तक 'यंग इंडिया' का प्रकाशन महात्मा गांधी ने सत्याग्रह और अहिंसा की विचार धार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए किया था।' ' इसमें महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा गांधी ने आगे बढ़कर यंग इंडिया के पृष्ठों को अपनी आवाज दी और विपरीत परिस्थितियों का बाद भी लेखन किया। सुचेता कृपलानी और अरुणा आसफ अली ने भी अपनी की कलम की धार से जागृति लाने का काम किया। ' (Women Entrepreneur India) ' स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की बात करें तो वर्ष 1965 में दूरदर्शन द्वारा पांच मिनट का समाचार बुलेटिन प्रारम्भ किया था। इसमें प्रतिमा पुरि ने न्यूज एंकर थीं और इसी के साथ उन्हें देश की पहली महिला एंकर होने का गौरव प्राप्त है।' (shethepeople)

उत्तराखंड में महिला पत्रकारों की भूमिका

भारत में वर्ष 1779 में 'हिकी गजट' के रूप में पहला समाचार पत्र अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हुआ था। ' उत्तर भारत क्षेत्र में 63 साल बाद पहला समाचार पत्र 'द हिल्स' उत्तराखंड की भूमि (अविभाजित प्रांत) से ही हुई थी, यहां मसूरी से वर्ष 1842 में जॉन मैकिनन ने अंग्रेजी भाषा का पाक्षिक पत्र शुरू किया था। ' (नवीन समाचार) उत्तराखंड में महिला पत्रकारों के पत्रकारिता में पदार्पण का स्पष्ट वर्णन तो नहीं मिलता है, लेकिन ' वर्ष 1966 में पहाड़ की वादियों से मातृशक्ति ने समाचार पत्र-पत्रिकाएं निकालनी शुरू की थी। इस वर्ष नैनीताल से श्याम कुमारी खान ने मासिक 'ह्यूमेनिस्ट आउटलुक' और देहरादून से उषा लता रावल ने मासिक 'गायत्री दर्शन' की शुरुआत की।' (सकलानी, शक्ति प्रसाद, 2004) वर्ष 9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश से अलग होकर उत्तराखंड राज्य का गठन हुआ था। अलग पर्वतीय राज्य बनने से पहले तक उत्तराखंड क्षेत्र में ' वर्ष 1972 से वर्ष 2000 तक 33 समाचार पत्र एवं पत्रिकताओं का सम्पादन महिलाओं द्वारा किया गया। ' (सकलानी, शक्ति प्रसाद, 2004) इसके बाद भी महिलाएं समाचार पत्र प्रकाशित कर रही हैं।

शोध समस्या का निर्माण

भारत के राष्ट्रपति रूप में द्रौपदी मुर्मू जिम्मेदारी सम्भाल रही हैं, प्रशासनिक सेवा से लेकर कारपोरेट क्षेत्र में भी महिलाएं नेतृत्वकर्ता के रूप में हैं। प्रजातंत्र में मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। विभिन्न सेवाओं के साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं के बढ़ते प्रतिनिधित्व के बीच मीडिया में स्थिति पता लगाने के लिए अध्ययन किया गया। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व पत्रकारिता पुरुष प्रधान रही, इसके पीछे अशिक्षा और कई प्रथाएं कारण रहीं। हालांकि स्वतंत्रता के बाद परिदृश्य थोड़ा जरूर बदला, लेकिन महिला पत्रकारों उपस्थिति काफी कम ही रही है। शोध पत्रिका मीडिया मीमांसा में भारतीय मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व और चुनौतियां शीर्षक से प्रकाशित शोध पत्र में नेशनल मीडिया को केंद्र में रखकर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया था। संयुक्त राष्ट्र के द्वारा भारतीय मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को लेकर किया गया सर्वेक्षण भी मीडिया संस्थानों के मुख्यालय तक सीमित रहा। जबकि नेशनल और क्षेत्रीय पत्रकारिता की कार्यशैली में काफी अंतर है। साथ ही राज्यों की विविधता और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार चुनौतियां भी भिन्न हो जाती हैं। ऐसे में क्षेत्रीय पत्रकारिता में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति को जनना भी अहम हो जाता है। ऐसे में उत्तराखंड राज्य के क्षेत्रीय पत्रकारिता विशेष संदर्भ में यह अध्ययन कार्य किया गया।

अध्ययन हेतु प्रश्न

- क्षेत्रीय पत्रकारिता में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति क्या है ?
- लीडिंग एवं लोकल प्रकाशनों में महिलाओं की कितनी हिस्सेदारी है ?
- क्षेत्रीय स्तर पर समाचार सम्पादन में कितनी महिलाएं सम्पादक हैं ?
- क्षेत्रीय मुख्यालय और ब्यूरो स्तर महिला पत्रकारों के प्रतिनिधित्व कितना है ?
- प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक और रेडियो माध्यम में कितनी महिला पत्रकार कार्यरत हैं ?
- स्थानीय स्तर पर महिला पत्रकारों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं ?

अध्ययन के उद्देश्य

- क्षेत्रीय स्तर पर पत्रकारिता में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति को जानना।
- लीडिंग एवं लोकल प्रकाशनों में महिलाओं की हिस्सेदारी का पता लगाना।
- क्षेत्रीय स्तर पर कितनी महिला पत्रकार सम्पादक के कार्य कर रही हैं ?
- क्षेत्रीय मुख्यालय और ब्यूरो स्तर महिला पत्रकारों के प्रतिनिधित्व का पता लगाना।
- प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक और रेडियो माध्यम में कितनी पत्रकारों की हिस्सेदारी का पता लगाना।
- स्थानीय स्तर पर महिला पत्रकारों को होने वाली समस्याओं का पता लगाना।

अध्ययन हेतु शोध प्रविधि:

यह शोध कार्य क्षेत्रीय पत्रकारिता में महिलाओं की प्रतिभागिता का अनुपात जानने के लिए किया गया है। इस अध्ययन

कार्य को भारत के उत्तराखंड राज्य पर किया गया है। अध्ययन कार्य में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संग्रह में उत्तराखंड सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग की सूचना निदर्शनी से किया गया है। अन्य सामग्री का चयन शोध पत्रों, पुस्तकों और इंटरनेट मीडिया की विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से किया गया है। इस कार्य में विषय वस्तु का विश्लेषण शोध विधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही सूचना विभाग में पंजीकृत प्रिंट, इलैक्ट्रा ॅनिक और रेडियो में कार्यरत पत्रकारों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

संकलित तथ्यों का विश्लेषण ::

1. उत्तराखंड राज्य और राज्य के बाहर से कितने समाचार पत्र- पत्रिकाएं, प्रकाशित एवं संचालित होते हैं, कितने रेडियो और न्यूज चैनल प्रसारित होते हैं।

प्रदेश से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र	105
सांध्य दैनिक समाचार पत्र	25
प्रदेश के बाहर से प्रकाशित समाचार पत्र	15
समाचार चैनल	47
रेडियो	10

विश्लेषण: कुमाऊं और गढ़वाल मंडल वाले उत्तराखंड राज्य में 13 जनपद हैं। यहां प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से संबंधित 202 पत्र-पत्रिकाएं और चैनल संचालित एवं राज्य के सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज हैं। सर्वाधिक 105 की संख्या में दैनिक समाचार पत्र राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों से प्रकाशित हैं। जबकि 25 सांध्य दैनिक पत्र पंजीकृत हैं। वहीं 15 समूहों के पत्र राज्य के बाहर से प्रकाशित होते हैं और उत्तराखंड में संचालित होते हैं। 47 न्यूज चैनल जो क्षेत्रीय पत्रकारिता को प्रमुखता देते हैं और 10 रेडियो संस्थान भी चल रहे हैं। ऐसे में देखा जाए तो समाचार पत्रों का दबदबा अधिक है।

2. उत्तराखंड सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग ने विभिन्न श्रेणियों में पत्रकारों के पंजीकरण की स्थिति

प्रदेश स्तरीय पत्रकार	100
प्रदेश स्तरीय स्वतंत्र पत्रकार	30
जिला स्तरीय स्वतंत्र पत्रकार	24
जिला स्तरीय पत्रकार	770

विश्लेषण: उत्तराखंड विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाला राज्य है। राज्य सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग के रिकॉर्ड में

पंजीकृत पत्रकारों की संख्या जनवरी 2023 तक 924 थी। इनमें जिला स्तर (तहसील और मुख्यालय दोनों) पर सबसे ज्यादा पत्रकार कार्यरत हैं। इनकी संख्या 770 है। जबकि सिर्फ 100 पत्रकार प्रदेश स्तरीय श्रेणी में पंजीकृत हैं, अर्थात यह राज्य मुख्यालय पर कार्यरत हैं। वहीं 54 पत्रकार ही स्वतंत्र पत्रकारिता कर रहे हैं। ऐसे में जिला श्रेणी में पंजीकृत पत्रकारों की संख्या सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार अधिक है।

3. समाचार पत्रों की श्रेणी के अनुसार उत्तराखंड में सरकारी मान्यता महिला पत्रकारों की स्थिति क्या है?

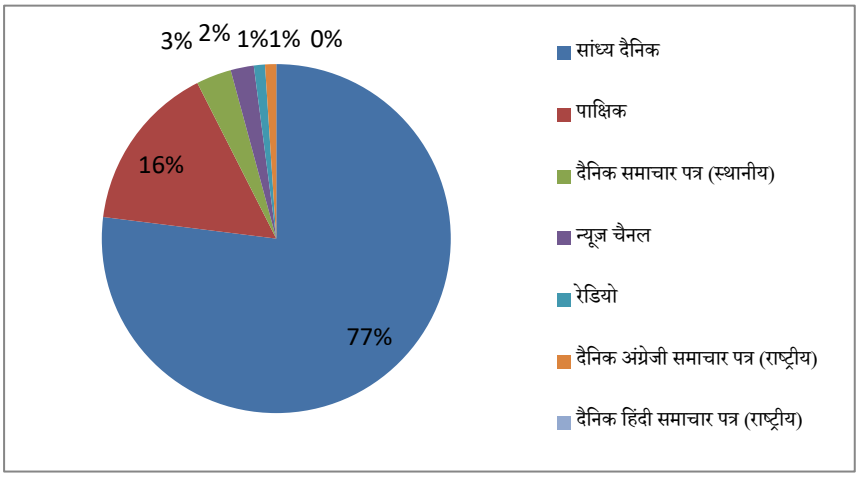

सांध्य दैनिक	69
पाक्षिक	14
दै. समाचार पत्र (स्थानीय)	3
न्यूज़ चैनल	2
रेडियो	1
दै. अंग्रेजी समाचार पत्र (राष्ट्रीय)	1
दै. हिंदी समाचार पत्र (राष्ट्रीय)	0

विश्लेषण: उत्तराखंड में प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया माध्यमों में सर्वाधिक संख्या समाचार पत्रों की है। इनमें भी दैनिक पत्रों की संख्या अधिक है। उत्तराखंड सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग में मान्यता पंजीकरण के मामले में देखें 924 पत्रकारों के पास सरकारी मान्यता है। (प्र.सं.3 में वर्णित) इसमें से सिर्फ 90 ही महिलाएं हैं, जबकि 834 पुरुष पत्रकार हैं। सरकारी रिकॉर्ड के लीडिंग हिन्दी समाचार पत्रों (राष्ट्रीय) की एक भी महिला पत्रकार के पास मान्यता नहीं है। हालांकि अंग्रेजी राष्ट्रीय पत्रों एक महिला को मान्यता मिली है। वहीं स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों में तीन महिलाओं का नाम मान्यता सूची में है। इनकी अपेक्षा सांध्य दैनिक में सबसे ज्यादा 69 और पाक्षिक में 14 महिलाओं के पास मान्यता है। इससे उत्तराखंड की पत्रकारिता और विशेष रूप से मुख्यधारा की पत्रकारिता में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति स्पष्ट होती है।

4. उत्तराखंड से प्रकाशित लीडिंग दैनिक समाचार पत्रों में कितनी संपादक एवं ब्यूरो प्रमुख महिलाएं हैं।

विश्लेषण: उत्तराखंड में दैनिक जागरण, अमर उजाला और दैनिक हिन्दुस्तान अधिक प्रसार होने की वजह से प्रमुख लीडिंग

समाचार पत्र हैं। कुमाऊं और गढ़वाल मंडल के अनुसार अलग-अलग दो यूनिटें स्थापित हैं। जबकि जनपद मुख्यालय और प्रमुख नगरों में ब्यूरो कार्यालय की व्यवस्था है। कुमाऊं की यूनिट नैनीताल जिले के हल्द्वानी में स्थापित है और यहां से छह जिलों के चार संस्कार प्रकाशित होते हैं। जबकि राज्य राजधानी देहरादून में गढ़वाल क्षेत्र की यूनिट है यहां से सात संस्करणों का प्रकाशन होता है। देहरादून में तीनों समाचार पत्रों के राज्य संपादक और हल्द्वानी में समाचार संपादक स्तर के अधिकारी काम देखते हैं। सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग के अनुसार दोनों मंडल की यूनिटों में संपादक पुरुष हैं। साथ ही सभी ब्यूरो प्रमुख भी पुरुष हैं। ऐसे में स्पष्ट होता है कि उत्तराखंड में लीडिंग समाचार पत्रों में बॉस की भूमिका में पुरुष ही हैं।

परिणाम व निष्कर्ष

भारतीय मीडिया जगत महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता जैसे मुद्दों को प्रमुखता प्रदान करता है, लेकिन खुद मीडिया क्षेत्र में महिलाएं बराबरी पर नहीं हैं। जो महिलाएं पत्रकारिता क्षेत्र में हैं वह निर्णायक भूमिका में हैं। (द्विवेदी, डॉ. आशीष, 2017) यह परिदृश्य तो राष्ट्रीय पर पत्रकारिता का है, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर पत्रकारिता पेशे में परिस्थितियां और ज्यादा गंभीर हैं। विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले उत्तराखंड राज्य में 181 वर्ष पहले सन 1842 में स्थानीय स्तर पर समाचार पत्र प्रकाशन शुरू किया गया। इसके 142 वर्ष बाद 1966 में उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र से दो महिलाओं ने पत्रकारिता में कदम रखते हुए समाचार पत्र निकाला। सन 2000 में उत्तर प्रदेश से विभाजित होने तक उत्तराखंड में 33 समाचार पत्र महिलाओं ने निकाले। अलग पर्वतीय राज्य बनने के बाद बड़े प्रिंट मीडिया घरानों ने गढ़वाल और फिर कुमाऊं मंडल से क्षेत्रीय संस्कारण निकालने शुरू किए। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ब्यूरो और स्टूडियो स्थापित हुए।

राज्य बनने के 23 वर्षों के सफर में स्थानीय मीडिया का जन सरोकारों और विकास में योगदान अहम रहा है। वर्तमान में 924 पंजीकृत पत्रकार हैं, लेकिन इनमें महिलाओं का देखें तो सिर्फ 90 यानि 9.74 प्रतिशत महिलाएं पत्रकारिता पेशे में। इनमें भी सर्वाधिक 8.96 प्रतिशत हिस्सेदारी स्थानीय सांध्य दैनिक समाचार पत्रों में मान्यता प्राप्त महिला पत्रकारों की है। जबकि राज्य से प्रकाशित लीडिंग समाचार पत्रों में पत्रकारिय कार्य करने वाली 12 महिला पत्रकार हैं। इनमें से सिर्फ 2 महिलाएं रिपोर्टिंग कर रही हैं। वहीं लीडिंग पत्रों की एक भी महिला प्रतिनिधि मान्यता प्राप्त नहीं है। उत्तराखंड की मृणाल पांडे हिन्दुस्तान समूह की प्रधान संपादक रह चुकी हैं। वर्तमान में उत्तराखंड मूल की मीनाक्षी कंडवाल, ममता तिवारी, दीवा बाफिला जैसी प्रख्यात न्यूज एंकर राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता कर रही हैं। वहीं उत्तराखंड में ही एक भी महिला पत्रकार मुख्य धारा की पत्रकारिता में निर्णायक भूमिका में नहीं है। अनुकूल परिस्थितियों में स्थानीय मीडिया में महिलाओं की प्रतिभागिता नाम मात्र होना चिंता जनक है। ऐसे में साफ नजर आता है कि महिलाओं को लेकर दृष्टिकोण परिवर्तित किए बगैर परिवर्तन की उम्मीद करना सम्भव नहीं होगा।

संदर्भ सूची:

1. अनुजा, डॉ. मंगला (2019), आधी दुनिया की पूरी पत्रकारिता, नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन .
2. द्विवेदी, डॉ. आशीष (2017), भारतीय मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व और चुनौतियां: विश्लेषणात्मक अध्ययन, मीडिया मीमांसा, जुलाई - सितंबर 2017.

3. सिंह, ध्वनि, (2020, अक्टूबर), महिला अधिकार एवं मीडिया सहभागिता : एक अध्ययन, JASRAE, 17(2), 119-122 DOI: 10.29070/JASRAE, Retrieved from https://ignited.in/I/a/303837, Accessed on 06/11/2023 at 7:20 pm
4. UN Wommen, (2019), Gender Inequality in Indian Media: A Preliminary Analysis.
5. जोशी, डॉ. नवीन, उत्तराखंड में पत्रकारिता का इतिहास, नवीन समाचार Retrieved from https://navinsamachar.com/journalism-in-uttarakhand accessed on 08/11/2023 at 3:15 pm
6. ऑप इंडिया, (2019 जनवरी 27), 'नारी शक्ति': साल 2018 का हिन्दी शब्द, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में शामिल, Retrieved from https://hindi.opindia.com/reports/nari-shakti-is-oxford-hindi-word-for-2018 accessed on 09/11/2023 at 3:15 pm
7. पिंक सिटी, (28 जुलाई 2021), पत्रकारिता में महिला पत्रकार, Retrieved from https://pinkcity.com/hi/women-journalists-in-journalism Accessed on 02/12/2023 at 8:33 am
8. Feminism in india, (23 Jan 2023), Where Are All The Women In Journalism?, Retrieved from https://feminisminindia.com/2023/01/23/where-are-all-the-women-in-journalism Accessed on 06/11/2023 at 6:33 pm
9. बुंदेला, स्वाती, भारत की चार महिला पत्रकारों का जानिए, सी दि पिपल, Retrieved from hindi.shethepeople.tv/blog/भारत-की-पहली-4-महिला-पत्रका Accessed on 06/11/2023 at 11:09 pm
10. Women Entrepreneur India, Independence Day: Remembering Contributions of Women Journalists & Writers in India's Freedom Struggle, Retrieved from https://www-womenentrepreneurindia-com.translate.goog/viewpoint/art-and-culture/independence-day-remembering-contributions-of-women-journalists-writers-in-india-s-freedom-struggle-nwid-3844.html?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc Accessed on 06/11/2023 at 11:45 pm
11. वर्मा, अभिषेक, (2017 नवंबर 29), भारतीय पत्रकारिता का विकास, जीके हिन्दी, Retrieved from https://www.gkhindi.net/पत्रकारिता-का-विकास Accessed on 06/11/2023 at 11:55 pm.